अच्छे अगुओं की अत्यधिक आवश्यकता (6:3-7)

यूनानी भाषा बोलने वालों की विधवाएं यरूशलेम की कलीसिया की दरारों में से गिर रही थीं। यदि प्रेरितों ने स्थिति को अच्छी तरह से न सम्भाला होता तो इसके अप्रत्यक्ष प्रभाव अनर्थकारी हो सकते थे। पिछले पाठ में हमने ध्यान दिया था कि संकट में किस प्रकार अच्छे अगुवे प्रतिक्रिया करते हैं। हमने सुझाव दिया था कि (1) अच्छे अगुवे समस्याओं को सावधानीपूर्वक तुरन्त सम्भाल लेते हैं, (2) अच्छे अगुवे मण्डली को साथ लेकर चलते हैं, और (3) अच्छे अगुवे ज़िम्मेदारी को निर्धारित कर देते हैं। क्योंकि कलीसिया की सबसे बड़ी आवश्यकता अच्छी अगुआई है, हम प्रेरितों 6 अध्याय में यह देखते हैं कि आयत 3 से 7 में अच्छी अगुआई के और कौन से सिद्धांतों को खोजा जा सकता है।

अच्छे अगुवे लोगों को योग्यतानुसार काम बांट देते हैं (6:3)

यद्यपि अच्छे अगुवे सभी काम स्वयं ही करने की कोशिश नहीं करते, परन्तु वे कुछ विशेष व्यक्तियों को उस काम पर ठहराकर और उन्हें उसकी ज़िम्मेदारी देकर यह सुनिश्चित करते हैं कि काम हुआ है। ''जो सब का काम है वह किसी का काम नहीं।'' निश्चित कार्यों को करने के लिए निश्चित लोगों का नियुक्त किया जाना आवश्यक है। प्रेरितों ने मण्डली में से विशेष कार्य (खिलाने-पिलाने की सेवा) करने के लिए निश्चित (संज्या में सात) पुरुषों को चुनने के लिए कहा।

इसका अर्थ यह नहीं कि किसी को भी उस कार्य को करने के लिए नियुक्त किया जा सकता था। चुने जाने वाले व्यक्तियों के लिए योग्य होना आवश्यक था। ''खिलाने-पिलाने की सेवा'' के लिए चुने जाने वाले पुरुषों में क्या योग्यताएं आवश्यक थीं? क्या उनका अच्छे बावर्ची होना आवश्यक था? क्या उनका सेहतमंद होना आवश्यक था ताकि वे सामान के भारी बोरे उठा सकते? क्या उन्हें तौलने की अच्छी समझ होनी चाहिए थी ताकि वे हर हाथ में निपुण बैरों (वेटरों) की तरह खाने की तीन या चार प्लेटें ले जा सकते? यकीनन ही हम जानते हैं कि ''खिलाने-पिलाने'' की सेवा के लिए इसकी आवश्यकता नहीं थी। ''खिलाने-पिलाने'' को ''प्रतिदिन की सेवकाई'' कहा गया है (पद 1)। मैं केवल यह ज़ोर देना चाहता

हूं कि यद्यपि इस कार्य के लिए शारीरिक कार्य आवश्यक था परन्तु योग्यताओं में जिस बात पर ज़ोर दिया गया था, वह बाहरी नहीं, बल्कि अंदरूनी अर्थात शारीरिक नहीं बल्कि आत्मिक थीं।

पहली योग्यता यह थी कि *पुरुष* चुने जाने थे, महिलाएं नहीं। अपनी कलीसिया के लिए परमेश्वर की योजना सदैव नेतृत्व के ओहदों पर *पुरुषों* को लगाने की थी।[1]

दूसरी योग्यता यह थी कि इन पुरुषों के मन सेवा करने वाले होने आवश्यक थे। उन्हें ''खाना बांटने की सेवा'' के लिए ज़िम्मेदार होना था; उन्होंने ''खिलाने-पिलाने'' की सेवा करनी थी। ''सेवकाई'' और ''सेवा'' ''सेवक'' के लिए शब्द डायकोनोस से अनुवादित किए गए हैं, ''सेवक'' शब्द हमें ''डीकन'' शब्द से मिला है। वर्षों से इस पर बहुत चर्चा हुई है कि वे ''पहले डीकन'' थे भी या नहीं। दोनों तरफ से अच्छे अवलोकन किए गए हैं। एक पक्ष तो टिप्पणी करता है कि ''डीकन'' का क्रिया के रूप में प्रयोग किया गया है और यह कि, यदि ये लोग डीकन नहीं थे तो हमारे पास कोई निश्चित पद नहीं है जिससे स्पष्ट होता हो कि डीकनों का विशेष काम क्या है। दूसरा पक्ष टिप्पणी करता है कि इन लोगों को ''डीकन''[2] नहीं कहा गया है और यह भी कि उनकी योग्यताएं वही नहीं हैं जो डीकनों की होनी चाहिए (1 तीमुथियुस 3:8-13)।[3] फिर यह पक्ष प्रश्न करता है कि क्या ऐल्डरों के बिना डीकन का ''पद'' हो भी सकता है (फिलिप्पियों 1:1; 1 तीमुथियुस 3:1, 8)।[4] सम्भवत: यह अच्छा है कि प्रेरितों 6 के प्रबन्ध को विशेष प्रबन्ध माना जाए। उन ''बारहों'' (6:2) के लिए ''सातों'' (21:8) की सहायता एक अस्थाई प्रबन्ध था जिसका स्थान बाद में ऐल्डरों एवं डीकनों की नियुक्ति ने ले लिया (प्रेरितों 11:30; 14:23; फिलिप्पियों 1:1)। इन सात लोगों को डीकनों का *अग्रगामी* माना जा सकता है। इस पद से हम डीकनों के काम के बारे में बहुत कुछ सीख *सकते* हैं।[5]

तीसरा, ध्यान दें कि इन पुरुष सेवकों में कुछ निश्चित *आत्मिक* गुणों का होना आवश्यक था। उनका ''सुनाम, पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण'' होना आवश्यक था। ''सुनाम'' का अर्थ है कि समाज के सभी वर्गों (विशेषकर मसीही समाज) में आदर होना चाहिए। यह भी आवश्यक था कि उनके चरित्र अच्छे हों, क्योंकि यीशु के कार्य को करते हुए उन्होंने यीशु और उसकी कलीसिया का प्रतिनिधित्व करना था। किसी भी व्यक्ति को कलीसिया में ''हाई प्रोफाइल''[6] की ज़िम्मेदारी नहीं दी जानी चाहिए, यदि उसका जीवन वैसा नहीं है जैसा कि होना चाहिए।[7]

''आत्मा से परिपूर्ण'' का अर्थ है ''आत्मा के अधीन।'' इस संदर्भ में यह चमत्कारी योग्यताओं के लिए नहीं है।[8] इस योग्यता से यह संकेत मिला है कि ये वे व्यक्ति थे जो आत्मिक रूप से *परिपक्व* थे। चुने जाने वाले सभी लोगों ने बपतिस्मे के समय दान के रूप में पवित्र आत्मा पाया था (प्रेरितों 2:38)। आत्मा की प्रेरणा से दिए गए वचन[9] को सुन-सुन कर और उसकी आज्ञा को मानकर, उन्होंने आत्मा को अपने जीवनों पर नियन्त्रण करने की अनुमति दे दी थी। परिणामस्वरूप, उन्हें ''आत्मा का फल'' अर्थात प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम (गलतियों 5:22, 23) मिला।[10]

''बुद्धि'' निर्धारित कार्य को करने के लिए व्यावहारिक योग्यता है। शायद हज़ारों लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अच्छी समझ और सामान्य ज्ञान की आवश्यकता थी। इस काम को करने के लिए उन्हीं लोगों का चुनाव किया जाना था जिन पर भरोसा किया जा सकता था।

पुन: इन योग्यताओं पर नज़र डालें: ''... सुनाम ...पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण।'' विशेषकर डीकनों की ''सेवा'' के लिए इन योग्यताओं के बारे में सोचने के बजाय, हमें कलीसिया के हर एक सेवक की योग्यताओं के रूप में देखना चाहिए चाहे वह प्रचारक हो, ऐल्डर हो, डीकन हो, बाइबल टीचर हो, कलीसिया का ख़ज़ान्ची हो, या आराधना भवन की साफ-सफाई करने वाला हो![11] चाहे कोई भी ज़िम्मेदारी दी जाए, आपका चरित्र अच्छा होना चाहिए। एक मसीही के रूप में आपको बढ़ने वाला, अपने जीवन में परमेश्वर को काम करने देने वाला होना चाहिए; आपको अच्छी समझ वाला व्यक्ति बनना चाहिए जो अपनी ज़िम्मेदारियों को प्रभावशाली ढंग से पूरा करता हो!

अच्छे अगुवे उनको दिए गए कार्यों के महत्व पर ज़ोर देते हैं (6:4)

जब अगुवे सही कार्य के लिए सही लोगों की तलाश शुरू करते हैं तो वे यह स्पष्ट करते हैं कि किया जाने वाला कार्य महत्वपूर्ण है। कई बार प्रेरितों के शब्द ''हम प्रार्थना में और वचन की सेवा में लगे रहेंगे'' का इस्तेमाल यह अर्थ देने के लिए किया गया है कि खिलाने-पिलाने की सेवा एक घटिया काम था। उन बारहों की यह मंशा नहीं थी। यह तथ्य कि उन्होंने कलीसिया की विशेष सभा बुलाई और सात पुरुषों का चुनाव करने का प्रबन्ध किया, हमें बताता है कि खिलाने-पिलाने की सेवा उनकी दृष्टि में महत्वपूर्ण थी।

पूरे नये नियम में ज़रूरतमंदों को भोजन खिलाने और विधवाओं की देखरेख के महत्व पर ज़ोर दिया गया है। न्याय के दिन यीशु कुछ लोगों से कहेगा, ''हे मेरे पिता के धन्य लोगो आओ उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिए तैयार किया गया है। क्योंकि मैं भूखा था और तुमने मुझे खाने को दिया; मैं प्यासा था, तुमने मुझे पानी पिलाया'' (मत्ती 25:34, 35)। याकूब ने ज़ोर देकर कहा कि ''हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है कि अनाथों और विधवाओं के क्लेश में उनकी सुधि लें'' (याकूब 1:27)।

मसीह के उद्देश्य को पूरा करने के लिए कोई काम ''बड़ा'' या ''छोटा'' नहीं है; कोई भी काम ''महत्वपूर्ण'' या ''गैरमहत्वपूर्ण'' नहीं है। यीशु ने कहा, ''जो कोई ... *केवल एक कटोरा ठण्डा पानी* पिलाए ... वह किसी रीति से अपना प्रतिफल न खोएगा'' (मत्ती 10:42)। आप परमेश्वर और मनुष्य की सेवा में जो कुछ कर रहे हैं, वह अर्थपूर्ण है।

यह सत्य है कि प्रार्थना और वचन की सेवकाई महत्वपूर्ण है; यदि प्राणों का उद्धार करना है तो ये सेवकाइयां आवश्यक हैं। परन्तु, हमें यह भी समझना चाहिए कि ''खिलाने-पिलाने की सेवा'' और इसके जैसी अन्य ज़िम्मेदारियां जी इतनी ही महत्वपूर्ण हैं। एक बार मैंने अरकैन्सास में जुडसोनिया नामक स्थान पर एक मण्डली में प्रचार किया। एक आदमी ने

गीत गाने में अगुआई की, अन्य लोगों ने प्रार्थना और प्रभु भोज बांटने में। क्या उस आराधना को सञ्भव बनाने के लिए केवल हमने ही अगुआई की? नहीं। कालान्तर में जब पुरुषों तथा स्त्रियों ने उस प्रार्थना भवन को बनाने के लिए काम किया, जिसमें हम इकट्ठे हुए थे तब किसी ने बैठने के लिए बैंच दिए होंगे जिन पर हम बैठे थे और वे गीतों की किताबें, जिनका उपयोग हमने किया। उस विशेष आराधना सभा की तैयारी के लिए एक मसीही व्यक्ति ने उस स्थान की सफाई की; एक अन्य ने प्रभु भोज तैयार किया; जबकि किसी और ने यह जांच की कि इमारत में तापमान सही है या नहीं। फिर, कई लोगों ने चन्दा देकर इस आराधना सभा में आने वाले खर्च को वहन किया, जिसमें बिजली का खर्चा भी शामिल था जिससे हम अपनी बाइबलें और गीतों की किताबें पढ़ सके। ''पर्दे के पीछे'' जो-जो काम हुए, वे भी उतना ही महत्व रखते हैं जितना कि जनता के सञ्मुख हुए कार्य।

यदि लोग उस कार्य के महत्व को समझते हैं, जो उन्हें करने के लिए दिया जाता है, तो वे अच्छे काम को करने वाले हैं और वे उनमें लगे रहेंगे। अच्छे अगुवे यह सुनिश्चित करते हैं कि प्रत्येक स्त्री या पुरुष यह जानने की कोशिश करे कि उसका कार्य कितना महत्वपूर्ण है।

अच्छे अगुवे मण्डली का भरोसा तथा समर्थन पाते हैं (6:5)

प्रेरितों द्वारा दी गई चुनौती के बदले में मण्डली द्वारा दिए गए प्रत्युत्तर को ''नये नियम में महान आश्चर्यकर्मों में से एक'' कहा गया है: ''यह बात सारी मण्डली को अच्छी लगी'' (आयत 5क)![12] मैं चालीस से अधिक वर्षों से प्रचार कर रहा हूं, और मैंने कभी भी *कोई* वाक्य नहीं सुना जो किसी मण्डली में हर एक को अच्छा लगा हो! प्रेरितों का सुझाव बीस से तीस हज़ार सदस्यों ने पसन्द किया। यह आश्चर्यजनक है!

क्या होता यदि प्रेरितों की बात को सारी मण्डली की स्वीकृति *न* मिलती? हम इसका सुनिश्चित उत्तर नहीं दे सकते, क्योंकि ऐसी स्थिति नहीं उभरी थी। हम यह कहने की स्थिति में हैं कि ऐसी स्थिति बद से बदतर हो जाती। किसी मण्डली के अगुओं की अभागी स्थिति को जिन्होंने सदस्यों का आदर खो दिया है, हम में से अधिकतर ने देखा है (यदि अनुभव नहीं किया है)। जब ऐसा होता है तो दुखांत बहुत दूर नहीं होता।

''यह बात सारी मण्डली को अच्छी लगी'' शब्द उस ढंग के प्रति श्रद्धांजलि हैं, जिससे प्रेरितों ने उस मामले को सञ्भाला। उन बारह प्रेरितों ने बड़ी ही संवेदनशीलता तथा भावुकता से उस भयंकर स्थिति को प्रभावशाली ढंग से सञ्भाला था। उन्होंने मण्डली में अपना भरोसा जताया था और अब सदस्यों ने अपने समर्थन से उसे स्वीकार किया। प्रत्येक मण्डली में ऐसा ही होना *चाहिए* और जब अगुवे और सदस्य एक दूसरे से प्रेम करेंगे और उनका आदर करेंगे तो ऐसा ही *होगा*।

अच्छे अगुवे कार्य करने वालों को अपना समर्थन तथा विश्वास प्रदान करते हैं (6:5, 6)

क्योंकि मण्डली ने प्रेरितों का सुझाव मान लिया था, इसलिए शीघ्र ही यह विचार कार्यान्वित हो गया। ''और उन्होंने (मण्डली ने) स्तिफनुस नामक एक पुरुष को जो विश्वास और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था, और फिलिप्पुस और प्रुखुरुस और नीकानोर और तीमोन और परमिनास और अन्ताकी वाले नीकुलाउस को जो यहूदी मत में आ गया था[13] चुन लिया'' (आयत 5ख)। कलीसिया ने इन सात पुरुषों का चयन करने का निर्णय कैसे लिया? यह प्रसिद्धि पाने की प्रतियोगिता नहीं थी; क्योंकि प्रेरितों ने कठोर शर्तें रखी थीं और मण्डली को ये शर्तें स्वीकार्य भी थीं। उसके अलावा लूका ने कोई और वर्णन नहीं किया कि वह चुनाव कैसे हुआ। जब परमेश्वर मनुष्यों को बताता है कि *क्या* करना है, तो वह यह उन पर छोड़ देता है कि वे स्वयं निर्णय करें कि उसकी इच्छा को पूरा कैसे करना है।[14] ऐसा ही था इस परिस्थिति में भी।

चुने हुए सात लोगों में सबसे पहले ''स्तिफनुस ... एक पुरुष ... जो विश्वास[15] और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था'' का नाम आता है। स्तिफनुस का उल्लेख पहले आता है क्योंकि वह इस अध्याय के अंतिम भाग और अध्याय 7 में मुख्य पात्र है। उसके बाद फिलिप्पुस का नाम है क्योंकि वह अध्याय 8 में मुख्य पात्र है। नया नियम अन्य पांच अर्थात प्रुखुरुस,[16] नीकानोर, तीमोन, परमिनास और यहूदी मत धारण करने वाले अन्ताकिया वासी[17] नीकुलाउस[18] के बारे में कुछ नहीं कहता। अति महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि सभी नाम *यूनानी* हैं। बहुत अधिक सम्भावना है कि इसका संकेत यह है कि चुने जाने वाले सभी (या अधिकांश) यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदी ही थे।[19] यदि ऐसा है तो हमें मण्डली की तरफ से आश्चर्यजनक कूटनीति दिखाई देती है। NIV स्टडी बाइबल में लुइस फोस्टर की टिप्पणी है ''बुड़बुड़ाना कलीसिया के यूनानी भाषा बोलने वाले भाग में से ही हुआ था; सो, इस काम को सम्भालने के लिए चुने जाने वाले उन्हीं में से लिए गए ताकि वे उनके हितों का प्रतिनिधित्व कर सकें।'' संक्षेप में इब्रानी यहूदियों[20] ने यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदियों से कहा: ''हमें भरोसा है कि आप *हमारी* विधवाओं का ध्यान रखेंगे।''[21]

मण्डली द्वारा सात पुरुषों का चयन करने के बाद ''इन्हें प्रेरितों के सामने खड़ा किया गया और उन्होंने [प्रेरितों ने[22]] प्रार्थना करके उन पर हाथ रखे'' (आयत 6)। जब कुछ लोगों को सेवा के लिए चुना जाता है तो उन्हें समारोह के साथ ''स्थान देना''[23] चाहिए। इससे उनके मनों पर काम की गम्भीरता अंकित हो जाती है और यह उनके मनों पर प्रभाव डालती है जिनकी सेवा करनी है, वे उनकी सहायता और समर्थन करने की आवश्यकता अनुभव करेंगे। प्रेरितों ने ऐसा प्रार्थना के द्वारा (14:23 भी देखिए) और मण्डली के सामने सात लोगों पर हाथ रखकर किया।

हम निश्चित तौर पर नहीं जानते कि हाथ रखने के समारोह में यह सब कैसे किया गया था। बाइबल के समयों में अनेक कारणों के लिए लोगों पर हाथ रखे गए थे: आशीष देने के लिए (उत्पत्ति 48:13-20), चंगाई के लिए (प्रेरितों 28:8) किसी काम पर ठहराने और

अधिकार देने के लिए (गिनती 27:18; प्रेरितों 13:3)।[24] प्रेरितों ने भी मसीहियों को चमत्कारी दान देने के लिए उन पर हाथ रखे (प्रेरितों 8:18; 19:6)। शायद इन सात लोगों के मामले में हाथ रखने से दोहरा उद्देश्य पूरा हुआ। उन्हें नये काम के लिए औपचारिक रूप से अलग करने *और* विशेष योग्यताएं[25] देने के लिए, जो उनकी नई ज़िम्मेदारियों[26] को पूरा करने के लिए आवश्यक थीं। प्रेरितों के कार्यों ने चुने हुए पुरुषों और मण्डली से यह कह दिया, ''हम इन आदमियों के पीछे हैं और हर प्रकार से इनका समर्थन करेंगे!'' अच्छे अगुवे अपने समर्थन को व्यक्त करते हैं।

हम प्रेरित नहीं हैं, जो लोगों पर हाथ रखकर उन्हें चमत्कारी योग्यताएं दे सकें। नये अगुओं को नियुक्त करने के लिए प्रयोग किए जाने वाले उस अवसर को चिह्नित करने के लिए वे साधन प्रेरितों के द्वारा प्रयुक्त किए गए साधनों से भिन्न होंगे। आइए दृढ़ निश्चय से उनके उदाहरण का निज़ तीन प्रकार से अनुसरण करें; (1) आइए हम गज़ीर होकर प्रार्थना में लग जाएं, (2) आइए हम कार्य की गज़ीरता पर ज़ोर दें, और (3) आइए हम नियुक्त होने वालों के प्रति अपना समर्थन व्यक्त करें।[27]

अच्छे अगुवे केवल नये कर्मचारियों के प्रति समर्थन ही व्यक्त नहीं करते बल्कि काम को पूरा करने के लिए उन पर भरोसा भी रखते हैं। पद 6 और 7 के ''बीच की पंक्तियों को पढ़ते हुए'' मैं निज़लिखित सुझाव देता हूं: (1) उन सातों पर प्रार्थना करने और हाथ रखने के बाद प्रेरितों ने बिना किसी हस्तक्षेप के उन्हें उनका काम करने दिया; (2) उन सातों ने बार-बार आकर अपने काम के बारे में प्रेरितों से निर्णय लेने के लिए सुझाव नहीं लिया; (3) उन सातों ने उस काम को पूरा किया, जो उन्हें सौंपा गया था। मैं यह मानता हूं कि दोनों कथन सत्य हैं, क्योंकि किसी भी दूसरे ढंग से इन पुरुषों के चयन का उद्देश्य निष्फल हो जाता; प्रेरित वचन की सेवकाई से फिर जाते। मैं मानता हूं कि तीसरा कथन सत्य है क्योंकि पद 7 में इसके सकारात्मक परिणाम दर्ज हैं।

मैं इन विवरणों पर बल देता हूं कि आज अक्सर डीकनों का चुनाव ऐल्डरों को उनके चरवाही के काम से स्वतन्त्र नहीं करता; डीकन हर काम के विषय में ऐल्डरों से निर्णय लेने के लिए कहते हैं।[28] मैं सभी ऐल्डरों से कहता हूं कि जब डीकन चुने गए हैं, तो उन्हें अपना काम करने दें! उस काम को करने के लिए उन पर *भरोसा रखें*। यदि आपको भरोसा नहीं है कि वे इस काम को कर सकेंगे तो उन्हें नियुक्त ही न करें। यदि वे आपके भरोसे को ठेस पहुंचाते हैं और दिए गए काम को करने में असफल होते हैं, तो ऐसे पुरुष नियुक्त करें जिन पर आप भरोसा कर *सकते* हैं। झुंड के चरवाहे होने के नाते अपना समय दें!

सारांश

शैतान ने कलीसिया को नाश करने की एक और कोशिश की और इस बार भी वह असफल हो गया था। हमारा पिछला पाठ शानदार वृद्धि के एक कथन के साथ आरज़्भ हुआ था; यह पाठ उसी कथन के साथ समाप्त होता है: ''और परमेश्वर का वचन फैलता गया और यरूशलेम में चेलों की गिनती बहुत बढ़ती गई'' (आयत 7क)। इससे पहले हमने

कलीसिया के सदस्यों का अनुमान बीस से तीस हज़ार तक का लगाया था; अब ''यरूशलेम में चेलों की गिनती *बहुत* बढ़ती गई।'' अभी हम कुल जोड़ का अनुमान नहीं लगा पाएंगे! फिर वृद्धि के इस कथन में एक आश्चर्यजनक टिप्पणी जुड़ जाती है: ''और *याजकों* का एक बड़ा समाज इस मत के अधीन हो गया'' (पद 7ख)। सम्भवत: ये ''महायाजकों'' में से नहीं होंगे जो प्रेरितों को सता रहे थे (4:23; 5:24) बल्कि ''साधारण'' याजक ही होंगे, जो एक साल में दो सप्ताह ही सेवा करते थे।[29] यह कथन ध्यान देने वाला है। उनकी तरह ही जो सभा में थे, याजकों की दिलचस्पी भी झूठी थी; इसके विपरीत, जो सभा में थे, उनमें से बहुतेरे मसीहियत के बारे में खोज करने के लिए नेक मन रखते थे। इस कारण वे ''मत के अधीन''[30] हो गए और मसीही बन गए! सुसमाचार की सामर्थ के प्रति यह कितनी अच्छी श्रद्धांजलि है!

आयत 7 यरूशलेम में कलीसिया की वृद्धि के बारे में बताती है। यह दिखाती है कि जब लोग दरारों से गिरते हैं तो क्या होता है और एक अच्छा नेतृत्व सकारात्मक ढंग से उसका उत्तर देता है।

विज़ुअल-एड नोट्स

इस और पिछले पाठ में मुख्यत: ज़ोर देने वाली बात यह है कि जब हर कोई अपना योगदान देता है तो कलीसिया बढ़ती है। यदि आप इस प्रस्तुति को क्लास में इस्तेमाल करें तो इसका उदाहरण इस प्रकार से दिया जा सकता है: क्लास के पहले, काफ़ी संख्या में छोटी लकड़ियों को बांध लें। क्लास के समय सदस्यों को सामने बुलाएं और उन्हें उस गट्ठे के दो टुकड़े करने को कहें (जब सभी नाकाम हो जाएं तो उसे क्लास के सामने अपने पास रखें)। अन्त में, गट्ठे को खोल दें और क्लास के सामने खड़े हर एक व्यक्ति को एक-एक छड़ी पकड़ा दें। वे इन छड़ियों को आसानी से तोड़ देंगे। यदि एक व्यक्ति सारा काम करने की कोशिश करता है तो वह उसे नहीं कर सकता और उसी काम को यदि अनेक लोगों में बांट दिया जाता है तो वह काम हो *सकता* है।

प्रवचन नोट्स

सी. ब्रूस व्हाइट ने प्रेरितों 6:1-5 पर ''लीडरशिप इन एक्शन'' के शीर्षक से एक प्रवचन दिया था। इसमें सामग्री की रूपरेखा के लिए अंग्रेज़ी की ''C'' बार-बार इस्तेमाल की गई:

(1) Complaining (शिकायत) (आयत 1); (2) Counteraction (प्रतिकार) (आयतें 2-4), और (3) Contentment (संतोष) (आयत 5)।

पादटिप्पणियां

[1]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में प्रेरितों 1:21 पर नोट्स देखिए। [2]बल्कि, उन्हें ''सातों'' (21:8) कहा जाता है। [3]उदाहरण के लिए, डीकन होने के योग्य बनने के लिए *परिवार* एक महत्वपूर्ण पहलू है, परन्तु उनकी योग्यताओं में परिवार की बात पर ध्यान नहीं दिया गया था। [4]यूनानी शब्द *डायकोनोस* का प्रयोग सामान्य अर्थ में किसी भी सेवक के लिए या *विशेष* अर्थ में उसके लिए किया जा सकता है जिसे मण्डली ने एक ''डीकन'' के रूप में मान्यता दी है। शब्दावली में देखिए ''डीकन।'' [5]ज़िम्मेदारी के काम की गहराई के साथ एक डीकन को इसे स्वीकार करने के लिए कहा जा सकता है, सामान्य व्यवहार में डीकनों की योग्यताओं में 6:3 की योग्यताओं को शामिल किया जाता है। दो सूचियों को पूरक के रूप में समझा जा सकता है। [6]''हाई प्रोफाइल'' एक स्थिति की ओर संकेत है जिसमें हम जो करते हैं, उसे दूसरों के द्वारा देखा जा सकता है; ''लो प्रोफाइल'' उस स्थिति की ओर संकेत है, जिसमें दूसरों को पता नहीं होता कि हम क्या कर रहे हैं। [7]इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि कोई व्यक्ति कितना अच्छा बोल सकता है, गाने में अगुआई कर सकता है, प्रार्थना कर सकता है आदि। यदि उसके गुणों को उसके भले जीवन का समर्थन नहीं है तो उसकी कोशिशें सामान्य तौर पर कलीसिया की सहायता करने के बजाय हानि करेंगी। [8]वाक्यांश में प्रेरितों पर लागू करते समय चमत्कारी योग्यताओं की बात ही सुझाई गई है। अब तक, हमारे पास कोई ऐसा रिकॉर्ड नहीं है कि प्रेरितों के अलावा किसी और ने भी अद्‌भुत कार्य किए हों। संकेत है कि प्रेरितों के उन पर हाथ रखने के बाद स्तिफनुस और फिलिप्पुस भी अद्‌भुत कार्य करने के योग्य हो गए (ध्यान दें 8:18)। [9]उन्होंने प्रेरितों के द्वारा सुनाए गए वचन को सुना। [10]पहली नज़र में प्रेरितों 6 अध्याय में सेवकों के लिए केवल तीन योग्यताएं ही दिखती हैं। परन्तु केवल एक ही ढंग जिससे कोई बता सकता है कि कोई व्यक्ति ''आत्मा से परिपूर्ण है'' का भाव यह देखना है कि उसके जीवन में ''आत्मा के फल'' हैं और यदि हैं तो वह उसमें नौ *और* ''योग्यताओं''को जोड़ देता है!

[11]यदि समय मिला तो स्थानीय मण्डली में कार्यों और पदों की सूची भी दी जा सकती है। [12]यदि आपने 5:7 की घटना को ''नये नियम में सबसे बड़े आश्चर्यकर्म'' का नाम दिया है तो आप 6:5 की घटना को ''*दूसरा* सबसे बड़ा आश्चर्यकर्म'' कह सकते हैं। इस बात को मज़ाक में कहा जाता है परन्तु अगुओं और मण्डली के सम्बन्ध में यह बात बड़ी गम्भीर हो जाती है। [13]यहूदी मत धारण करने वाले किसी व्यक्ति का कलीसिया में आने का यह पहला उल्लेख है। सम्भवत: कइयों ने पहले भी बपतिस्मा लिया था (2:10, 38, 41), परन्तु यहूदी मत में से किसी व्यक्ति का मसीही बनने का यह पहला उल्लेख है। ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में शब्दावली में देखिए ''यहूदी मत धारण करने वाले।'' [14]14:21-23 के सम्बन्ध में कुछ और सुझाव दिए जाएंगे। बाद के एक भाग में इन पदों पर नोट्स देखिए। [15]''विश्वास से परिपूर्ण'' विशेष रूप से उल्लेख नहीं किया गया परन्तु तात्पर्य योग्यताओं से ही था। ''विश्वास और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण'' शब्द से हमें ज्ञात होता है कि वह प्रेरितों द्वारा ठहराई गई योग्यताओं को पूरा करता था (और इसका तात्पर्य यह है कि अन्य 6 भी इस योग्यता को पूरा करते थे)। [16]बाइबल से बाहर की परम्परा के अनुसार प्रुखुरुस को अन्ताकिया में शहीद किया गया। [17]क्योंकि लूका ने कहा कि निकुलाउस ''अन्ताकिया से'' था और अन्य 6 के बारे में उसने इस प्रकार की जानकारी नहीं दी, सम्भवत: इस वाक्यांश का कुछ महत्व है। शायद लूका सीरिया के अन्ताकिया का परिचय दे रहा था, जो पौलुस की मिशनरी गतिविधि का मुख्य स्थान होना था। (और, अप्रेरित परम्परा कहती है कि लूका का गृह-नगर अन्ताकिया था।) [18]निकुलाइयों के पंथ (प्रकाशितवाक्य 2:6, 15 में जिसकी निन्दा की गई) का दावा था कि इसका आरम्भ निकुलाउस से हुआ। सम्भवत: यह मत अपनी बात को रखने के लिए केवल उस नाम का इस्तेमाल करता था। [19]यह तथ्य कि सभी सातों के नाम यूनानी थे, अपने आप में यह प्रमाणित नहीं करता कि वे सब लोग यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदी थे; प्रेरितों में से कइयों के नाम यूनानी थे (अन्द्रियास, फिलिप्पुस)। परन्तु फिलिप्पुस के अलावा, अधिकतर नाम साधारण यूनानी नाम नहीं थे, जो फलस्तीनी यहूदियों के लिए उपयुक्त हों। ये सात आदमी सम्भवत: यरूशलेम की कलीसिया में यूनानी भाषा बोलने वाले लोगों के अगुवे थे। [20]इब्रानी यहूदी बहुमत में होंगे।

[21]यह सम्भव है कि उन सातों का चुनाव केवल यूनानी भाषा बोलने वाली विधवाओं की देखभाल के लिए ही किया गया हो। संदर्भ इस स्थिति के पक्ष में है कि उन्हें भोजन बांटने के पूरे काम के लिए ठहराया गया था (जिसमें विधवाओं के अलावा और भी लोग शामिल होंगे)। [22]यह सम्भावना भी व्यक्त की जाती है कि सारी मण्डली ने उन सातों पर हाथ रखे होंगे, परन्तु ''उन्होंने'' का पूर्वपद ''प्रेरितों'' ही है। [23]बाद के एक भाग में पुनः प्रेरितों 14:21-23 के नोट्स देखें। [24]''पर हाथ रखे'' शब्द का अर्थ ''पकड़कर'' (4:3) भी हो सकता था। फिर, पुराने नियम में पहचान के लिए पशुओं पर हाथ रखे जाते थे (लैव्यव्यवस्था 1:4)। [25]कुछ समय बाद ही स्तिफनुस और फिलिप्पुस को आश्चर्यकर्म करने की शक्तियां पाए हुए दिखाया गया था (6:8; 8:6-8)। हमें अन्य पांच के बारे में कुछ नहीं बताया गया। यदि स्तिफनुस और फिलिप्पुस को कलीसिया के विशेष सेवक ठहराते समय आश्चर्यकर्म करने के दान नहीं मिले, तो थोड़ी देर बाद प्रेरितों ने उन पर हाथ रख दिए होंगे ताकि उन्हें भी दान मिल जाएं। [26]शास्त्र में उत्तराधिकारी के लिए अपने पूर्वाधिकारी के समान शक्तियां पाना एक सामान्य व्यवहार था, जिससे यह पता चले कि परमेश्वर उसके साथ भी था जैसे वह उसके पूर्वाधिकारी के साथ था। शायद इन सातों को विशेष अद्‌भुत काम करने की शक्तियां यह दिखाने के लिए दी गई थीं कि परमेश्वर उनके साथ भी था जैसे वह बारह के साथ था। [27]अमेरिका में किसी को समर्थन कई बार किसी के हाथ हिलाने या उसकी पीठ थपथपाकर दिया जाता है। मैं अक्सर मण्डली को आराधना के अन्त में नये अगुओं के समर्थन के लिए उनसे हाथ मिलाकर या उनकी पीठ पर थपकी लगाकर ''अपने हाथ रखने'' के लिए उत्साहित करता हूं। [28]कई बार यह ऐल्डरों की गलती होती है, जो उनकी अगुआई के ढंग का परिणाम है। कई बार यह डीकनों की गलती होती है, वे अपने कामों के लिए पूरी ज़िम्मेदारी को स्वीकार करने की इच्छा नहीं रखते। [29]यह अनुमान लगाया गया है कि उस समय के अनुसार अठारह हज़ार याजक और लेवी थे। इनमें से कुछ यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के पिता जकरयाह की भांति ईमानदार और परमेश्वर का भय रखने वाले थे (लूका 1:5, 6)। इसके बारे में काफ़ी सोच विचार है कि क्या ये परिवर्तित याजक मन्दिर में सेवा करते रहे या नहीं। मुझे इसका कोई कारण नहीं लगता कि वे करते होंगे। यदि वे करते थे तो उन्होंने इस स्पष्ट शिक्षा कि ''परमप्रधान हाथ के बनाए घरों में नहीं रहता'' (तु. 7:48) के विपरीत किया। फिर यदि उन्होंने ऐसा किया तो यरूशलेम से मसीहियों के बिखर जाने के समय (8:1-4), उन्हें अपने काम और मसीह के लिए स्थिर रहने में से एक को चुनना था। [30]यह संक्षिप्त कथन दिखाता है कि लोग केवल यीशु पर विश्वास लाकर ही मसीही नहीं बने। उनके द्वारा वचन को ग्रहण करने के लिए आज्ञाकारिता अनिवार्य थी। कई लोग इसके प्रभाव से बचने के लिए वाक्यांश का अर्थ, ''आज्ञाकारिता जिसमें विश्वास है'' बताते हैं। परन्तु मूल शास्त्र में ''याजक. ... इस मत के अधीन *हो गए*'' है। (अंग्रेज़ी बाइबल में The priests *obeyed the faith*)। यहां ''मत'' से भाव यीशु मसीह में विश्वास पर केन्द्रित शिक्षा है। अन्य शब्दों में मत नये नियम को कहा गया है (देखिए यहूदा 3)। याजक वह सब कुछ करने के इच्छुक थे जो यीशु उनसे चाहता था कि वे करें, इसमें बपतिस्मा भी शामिल था (2:38)।